श्रम विभाग

ग्रादेश

दिनांक 24 ग्रप्रैल, 1984

सं. श्रो. वि./सोनीपत/40-84/15833.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. हरियाणा इलैक्ट्रो स्टील लि., लरसीली (सोनीपत) के श्रीमक श्री रणधीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, को धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान को गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा सरकारी अधिमूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 नवस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारी अधिमूचना सं० 3864-ए.एस.ओ (ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त अधिनियम को घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायित गय हिंतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादप्रस्त भामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री रणधीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो.वि./सोनीपत/216-83/15840.--पूंकि हरियाणा के राज्यनाल को राये हैं कि मैं० सिणमा रवड़, प्रा. लि., ध्याऊ मनियारी, जी. टी. रोड., कुण्डनो, (सोनिन्न) के श्रीनिक श्रो जनमेर श्रता तथा उतके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायित गंप हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इस लिए, श्रव, भौबोगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 को उन्थारा (1) के लण्ड (ग) द्वारा प्रशान को गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यनात इसके द्वारा सरकारों अधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-70/32573, दिनांक 6 स्वस्वर, 1970 के साथ पठित सरकारों श्रधिसूचना सं० 3864-ए.एस.ओ.(ई) श्रम-70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गाठेत श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादश्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय हेनुनिर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादश्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री जमशेद अली की सेवाओं का समापन न्यायौचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ।

सं श्रो.वि./एफ.डी./51-84/15847.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मै. पी. एच. फोर्जिंग्ज, प्लाट नं 300, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के अमिक श्रा राम किशन सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियामा के राज्यमान विवाद को न्यायिन र्मय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अन, श्रीयोगिक निवाद मिनियम, 1947 की धारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यमान इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त मिश्रिनियम को धारा 7 के श्रश्नोत श्रौद्योगिक प्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रीमक तथा प्रबन्धकों के मध्य न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं;—

क्या श्री राम किशन सिंह की सेवामों का समापन त्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं.श्रो.वि./एफ. डी./51-84/15854.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं अपि.एच. फोर्रिजिज, क्लाट नं 300, सैक्टर 24, फरीदाबाद के श्रमिक श्री बेग्रन्त सिंह तका उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, मन, भौद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा राज्य सरकार द्वारा उक्त भ्रधिनियम की धारा 7 के भ्रधीन भौद्योगिक श्रिष्ठकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे निर्दिष्ट विवादग्रस्त या इससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित मामले श्रमिक तथा प्रवन्धकों के मध्य स्थायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं ।

क्या श्री वेश्रन्त सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं.मी.वि./रोहतक/74-84/15861. — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै. सोमानी पिलॉकगटन्ज लि॰ कसार बहादुरगढ़ (रोहतक) के श्रमिक श्री बलजीत सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है ;

मौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्टिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्टमूचना सं. 9641-1-श्रम/70/32573, दिनांक 6 नवस्थर, 1970 के साथ पठित सरकारी श्रिष्टमूचना सं. 3864-ए.एस.ब्रो. (ई) श्रम-70/1648, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उक्त श्रिष्टि-नियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उत्तसे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रिमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री बलजीत सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं स्रो.वि./ जी.जी.एन./31-84/15868.—चूंकि राज्यपाल, हरियाणा की राय है कि मैं. मैंडीटैक्स फार्मा प्रा. लि॰ रोड महरोली रोड बी-32 इण्डस्ट्रीयल इस्टेट गुड़गांवा, के श्रमिक श्री राम स्रवध तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

भ्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, मब, मोद्योगिक विवाद मिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिधिसूचना सं॰ 11495-जी-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, द्वारा उक्त मिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे मुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिणंय के लिए निदिष्ट करते हैं, जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत मयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री राम श्रवध की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.वि./हिसार/132-83/15875.—-चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राथ है कि 1. निमन्त्रक हरियाणा रोड़वेज चण्डीगढ़, 2. जनरल मैंनेजर हरियाणा रोड़वेज सिरसा, के श्रमिक श्री भूषण तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित गामले में कोई ग्रीदोगिक विवाद है;

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

4 P. Oak

इसलिए, ग्रब, ग्रोद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये, हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा सरकारी ग्रिधिमूचना सं. 9641—1—श्रम—70/32573, दिनांक 6 नवन्तर, 1970 के सक्त्य पठित सरकारी ग्रिधिमूचना सं. 3864—ए.एस.श्रो. (ई) श्रम—70/1348, दिनांक 8 मई, 1970 द्वारा उन्ता ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो दिवादग्रस्त मामला है या उस्त दिवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला है :—

क्या श्री भूषण की सेवाओं का समापन न्यायोचित तया ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?